सिक्किम विश्वविद्यालय
स्थापित: 2007

वॉल्यूम: VI
अंक: IV
जुलाई 2018

सिक्किम विश्वविद्यालय क्रॉनिकल

संपादकीय

प्रियजनों,

दिनांक २ जुलाई को संसद के एक अधिनियम द्वारा वर्ष २००७ में विश्वविद्यालय की स्थापना होने से लेकर ग्यारह वर्ष हो गए हैं।

इन ग्यारह वर्षों में हम विभागों, विद्यापीठों, केंद्रों, संकाय शक्तियों और छात्रों के नामांकन की संख्या के मामले में हम विकास किए हैं। विश्वविद्यालय ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कर लिया है और हम निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ संकाय सदस्यों और समर्पित गैर-शिक्षण कर्मचारियों के होने का दावा कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय देश में महत्वपूर्ण शैक्षणिक और शोध केंद्रों में से एक बनने और मानव संसाधनों को विकसित करने का लक्ष्य रखता है, ताकि पूरी दुनिया में अच्छी तरह से अवशोषित हो सके।

विशावविद्यालय के ग्यारहवें स्थापना दिवस समारोह को डॉ. एकलव्य शर्मा, उप महानिदेशक, अंतर्राष्ट्रीय एकीकृत पहाड़ विकास केंद्र (आईसीआईएमओडी), काठमांडू, नेपाल की उपस्थिति से रेखांकित किया था। डॉ. शर्मा ने "हिंदू कुश हिमालय में जलवायु परिवर्तन : पर्यावरण और विकास के छेड़छाड़ में जटिल चुनौतियाँ के समाधानों का विकास" विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया।

हम विश्वविद्यालय को उत्कृष्टता प्रदान करने की ओर प्रयास जारी रखें और विश्वविद्यालय के विकास आगे बढ़ाते रहें।

श्रीमती कुंजिनी प्रकाश दर्नाल

इस अंक में :

संपादकीय
11वां स्थापना दिवस २०१८
जर्मनी में नोबल पुरस्कार विजेताओं की बैठक
मानव अधिकार और बाल अधिकार पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम
"हिंदू कुश हिमालय में जलवायु परिवर्तन : पर्यावरण और विकास के छेड़छाड़ में जटिल चुनौतियाँ के समाधानों का विकास" विषय पर ११वां स्थापना दिवस व्याख्यान
11वां स्थापना दिवस समारोह

11वां स्थापना दिवस समारोह

विश्वविद्यालय के 11वें स्थापना दिवस समारोह दिनांक २ जुलाई २०१८ को मनाया गया था। कुलपति प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग ने इस अवसर पर कंचनजंघा प्रबंधन खंड में विश्वविद्यालय ध्वज का ध्वजारोहण किया।

कुलसचिव श्री टी.के.कौल ने उपस्थित सुधिवृन्दों को संबोधित किया और उसके बाद कुलपति, प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग द्वारा संक्षिप्त भाषण दिया। इस कार्यक्रम में संकाय सदस्य, कर्मचारी और छात्र उपस्थित थे।

ईमेल आईडी : suchronicle@cus.ac.in

जर्मनी में नोबल पुरस्कार विजेताओं की बैठक

प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तमांग के मार्गदर्शन में जैव सूचना विज्ञान केंद्र के शोध सहयोगी (डीबीटी डॉ. मंगेश वसंत सूर्यवंशी और सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के एक अतिथि संकाय ने जर्मनी के लिंडाऊ में दिनांक २४ जुलाई से २९ जुलाई २०१८ तक के दौरान आयोजित ६८वें नोबेल पुरस्कार विजेता बैठक में में भाग लिया था। ६८वें नोबेल पुरस्कार विजेता बैठक में फिजियोलॉजी और मेडिसिन के लिए समर्पित एक वार्षिक बैठक है। ३९ नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने दुनिया भर के असाधारण युवा वैज्ञानिकों से मुलाकात की। डॉ. सूर्यवंशी ५०००० से अधिक आवेदकों से चुने गए ८४ विभिन्न देशों के ६०० युवा वैज्ञानिकों में से एक थे। यह यात्रा पूरी तरह से विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत और डीएफजी, जर्मनी द्वारा प्रायोजित थी। उन्होंने कई नोबेल पुरस्कार विजेताओं से मुलाकात की और उनके साथ बातचीत की। विश्वविद्यालय ने नोबेल पुरस्कार विजेताओं के साथ इस प्रतिष्ठित बैठक में सिक्किम विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने के लिए डॉ मंगेश को बधाई दी।

ऊपर के चित्र में; ऑस्ट्रेलिया के प्रो. जे. रॉबिन वारेन, २००५ में हेलोकोबैक्टर पाइलोरी की खोज और गैस्ट्रिक और पेप्टिक अल्सर में इसकी भूमिका के लिए चिकित्सा में नोबेल पुरस्कार विजेता के साथ डॉ. मंगेश।

मानव अधिकार और बाल अधिकार पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, नई दिल्ली के सहयोग से राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा मानव अधिकार और बाल अधिकारों पर दिनांक ३१ जुलाई २०१८ को कावेरी हॉल में एक दिवसीय जागरुगता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कुलपति प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामांग और सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री ए. पी. सुब्बा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

न्यायमूर्ति सुब्बा ने प्राचीन काल में प्राकृतिक अधिकारों के रूप में मानवाधिकारों की अवधारणा पर एक संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मानवाधिकारों की अवधारणा के विकास के बारे में भी उल्लेख किया और इसके अलग-अलग नाम के बारे में भी बताया- मैग्ना कार्टा, बिल ऑफ राइट्स, फ्रांसीसी घोषणा आदि। प्रोफेसर तामांग ने अपने संबोधन में रेखांकित किया है कि बच्चे को मूलभूत आवश्यकताएं प्रदान करना प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है।

डॉ सोनम यांगचेन भूटिया ने लैंगिक अपराध (पीओसीएसओ) अधिनियम, २०१२ से बच्चों पर संरक्षण पर बात की। डॉ सोनम ने पीओसीएसओ के उद्देश्यों पर चर्चा की, जो पीओसीएसओ अधिनियम के तहत यौन अपराधों का अर्थ, अपराध और सजा, अपराधों की रिपोर्टिंग, यौन अपराधों के पीड़ित बच्चों के लिए उपलब्ध राहत और बच्चे की रक्षा के लिए प्रमुख प्राधिकरण के बारे में बताया। इसके बाद एक प्रश्नोत्तरी सत्र था जिसमें प्रतिभागियों को बहुत से प्रश्नों का उत्तर प्राप्त हुआ।

डॉ. गड्डे ओम प्रसाद ने भारत में बाल श्रम के मुद्दे पर चर्चा की और उन्होंने इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित चर्चा की शुरुआत की कि बाल शब्द आयुवधि पर निर्भर है। उन्होंने उन बच्चों की उम्र में अंतर पर बात की, जो काम करते हैं या जो अलग-अलग देशों में स्कूल छोड़ते हैं। उन्होंने एक बच्चे के लिए भारत में संवैधानिक और विधायी प्रावधानों, बच्चों के लिए सरकार द्वारा बनाई गई विभिन्न नीतियों, इसके लक्ष्यों और उद्देश्यों, भारत में बाल श्रम की परिमाण, इसके कारणों और प्रभावों के बारे में भी चर्चा की।

जागरूकता कार्यक्रम एक सूचनापरक कार्यक्रम था जिसमें ज्ञान की बहुत सारी जानकारियाँ सांझा की गई।

11वां स्थापना दिवस समारोह व्याख्यान

डॉ. एकलव्य शर्मा, उप महानिदेशक, आईसीआईएमओडी, काठमांडू, नेपाल - डॉ. शर्मा हिंदू कुश हिमालयी (एचकेएच) क्षेत्र के आठ देशों में काम कर रहे सतत पहाड़ विकास पर ३५ से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ एक प्रतिष्ठित पारिस्थितिक विज्ञानी हैं। डॉ. शर्मा ने जी. बी. राष्ट्रीय हिमलाई पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान के लिए सिक्किम, भारत में एक मजबूत केंद्र विकसित किया है। उन्होंने प्रमुख पर्यटक स्थलों में सिक्किम की अद्वितीय जैविक विविधता के संरक्षण के लिए समुदाय आधारित उद्यम विकास दृष्टिकोण की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियां भी हासिल की हैं। आईसीआईएमओडी में शामिल होने के बाद उन्होंने जैव विविधता संरक्षण और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और लचीलापन निर्माण सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने हुए एचकेएच के आठ देशों में अपने शोध योगदान का विस्तार किया है।

“हिंदू कुश हिमालय में जलवायु + परिवर्तन : पर्यावरण और विकास के छेड़छाड़ में जटिल चुनौतियाँ के समाधानों का विकास”

दुनिया के २२% भूमि क्षेत्र पर पहाड़ी हैं और ९१५ मिलियन लोग पहाड़ों में रहते हैं। मानवता का आधा हिस्सा विशेष रूप से पानी और जैव विविधता के लिए पहाड़ संसाधनों पर निर्भर करता है। पहाड़ों की विशाल जल भंडारण क्षमता बर्फ, हिमनद, परमाफ्रॉस्ट, बर्फ-पैक, मिट्टी, या भूजल, आर्द्रभूमि, और नदियों के रूप में और वाटरशेड कार्यों के माध्यम से भूजल रिचार्ज में वृद्धि के रूप में लाखों लोगों के लिए जीवन रेखा प्रदान करती है। यह विशेषता अक्सर पहाड़ों को "जल टावर" के रूप में संदर्भित करती है जो विशेष रूप से उन योगदानों के लिए होती है जो वे घनी आबादी वाले डाउनस्ट्रीम के लिए प्रदान करते हैं। दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पहाड़ों में जातीय विविधता अधिक है। गरीबी और भेद्यता विकासशील देशों में लगभग ३ ९% पर्वत आबादी के साथ रहती है जिन्हें खाद्य असुरक्षा के लिए भी कमजोर माना जाता है।

हिंदू कुश हिमालय (एचकेएच) अपने सांस्कृतिक, जैविक, सौंदर्य और भू-जलविद्युत मूल्य के लिए जाना जाता है। पहाड़ियों, घाटियों, पठारों और पहाड़ों के विशाल परिसर में दुनिया के कुछ सबसे ऊंचे शिखर और ६०००० किमी से अधिक ग्लेशियर और ७६०००० किमी २ बर्फ आवरण शामिल हैं। ये बर्फ और बर्फ भंडार ताजे पानी की एक विशाल भंडार का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कई अन्य क्षेत्रीय आवश्यकताओं के बीच ऊर्जा, पर्यटन, स्वच्छता और खाद्य उत्पादन के लिए संसाधन प्रदान करता है। इस क्षेत्र की दस प्रमुख नदी घाटी अमू दारा, ब्रह्मपुत्र, गंगा, सिंधु, इर्रावाडी, मेकांग, साल्विन, तारिम, यांग्त्ज़ी और येल्लो संस्कृति, वाणिज्य, संचार और संसाधन प्रबंधन के मामले में अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम क्षेत्रों को जोड़ती हैं और २४० मिलियन लोग, जो एचकेएच क्षेत्र में रहते हैं सहित एशिया में १.९ बिलियन लोगों को वस्तुएँ और सेवाएं प्रदान करती हैं ।

हिन्दू कुश हिमालयी क्षेत्र में ३६ वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट में से चार हैं। इस क्षेत्र का ३९% संरक्षित क्षेत्रों से ढका हुआ है जो पारिस्थितिक तंत्र की एक विस्तृत श्रृंखला को बरकरार रखते हैं और भोजन, जल और जलवायु विनियमन के संदर्भ में कई सेवाएं प्रदान करते हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश पारिस्थितिक तंत्र जलवायु और गैर-जलवायु परिवर्तनों के अधीन हैं जो उनके कार्य को प्रभावित करते हैं और काफी हद तक इस क्षेत्र में आजीविका और सामुदायिक लचीलापन को प्रभावित करते हैं।

आठ देशों- अफगानिस्तान, भूटान, चीन, भारत, म्यांमार, नेपाल और पाकिस्तान में हिन्दू कुश हिमालय क्षेत्र विभाजित हैं। हम जानते हैं कि एचकेएच संसाधनों के साझा प्रबंधन से ही बेहतर विकास के परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, इस क्षेत्र में संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने के लिए बेहतर सीमा पार बाढ़ तैयारी के लिए बेहतर सहयोग, पारिस्थितिक तंत्र प्रबंधन और जल और ऊर्जा साझाकरण को सक्षम कर सकता है। हालांकि, संसाधनों का साझा प्रबंधन एक चुनौती बनी हुई है। हिन्दू कुश हिमालयी क्षेत्र में आठ देशों में से चार को मानव विकास सूचकांक में 'कम विकसित देशों' के रूप में वर्गीकृत किया गया है; 'फ्रेजाइल राज्य सूचकांक” में पांच से आठ देशों को "सतर्क स्थिति" में रखा गया है; और "शांति सूचकांक" एचकेएच के चार देशों को निम्न से बहुत कम तक दर्शाता है। इसलिए इस क्षेत्र की नाजुकता, भेद्यता और गरीबी सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे बन चुकी हैं।

जलवायु परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तनों की एक श्रृंखला जैसे तेजी से जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, प्रवासन, ग्रामीण श्रम की महिलाकरण और आर्थिक विकास एचकेएच क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन के प्रमुख कारण हैं। पहाड़ी लोग और पारिस्थितिकी तंत्र जलवायु परिवर्तन के लिए बेहद कमजोर हैं। तापमान वृद्धि इस भविष्यवाणी के साथ बढ़ रही है कि २०सी दुनिया में उच्च ऊंचाई पर तापमान ३ से चार डिग्री बढ़ सकता है। इस क्षेत्र की पारिस्थितिकीय स्थिरता में विशाल बर्फ भंडार और हिमनद पिघलने सहित कई खतरे हैं, जो इस पहाड़ी क्षेत्र की भूमिका को जल जलाशय के रूप में खतरे में डालते हैं। बाढ़ और सूखे की आवृत्ति बढ़ गई है। जंगल अवक्रम, आर्द्रभूमि, खुली भूमि और जैव विविधता की कमी आजीविका में गिरावट लाती है।

जटिल जलवायु और पहाड़ों और डाउनस्ट्रीम में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को बदलने के लिए, आईसीआईएमओडी पर्यावरण संसाधन के अंतरण और एचकेएच के विकास पर ज्ञान संसाधन और विनिमय, सीमा-पार सहयोग और जल संसाधनों और नदी तट प्रबंधन, जैव विविधता संरक्षण और उपयोग, परिदृश्य प्रबंधन और लचीलापन निर्माण पर विज्ञान-नीति संवाद की सुविधा प्रदान करते हुए समाधान विकसित करता है। आईसीआईएमओडी अनुकूलन और लचीलापन निर्माण, सीमा-पार परिदृश्य प्रबंधन, नदी तट और क्रायोस्फीयर, वायुमंडल, क्षेत्रीय सूचना प्रणाली और पहाड़ ज्ञान और कार्य नेटवर्क पर अपने क्षेत्रीय कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय में क्षेत्रीय समाधानों के लिए कार्य करता है।

हिन्दू कुश क्षेत्र जैसे पहाड़ी क्षेत्र बहुत वस्तु और सेवाएं उपलब्ध कराता हैं, हालांकि अनुसंधान और विकास में अधिक निवेश के लिए उन्हें वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय नीतियों में पर्याप्त ध्यान नहीं मिला है। इस प्रतिमान को बदलना है, यदि पहाड़ों और समतल भूमि क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम किया जाना चाहिए और २०३० तक सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास किया जाना है। पहाड़ों, पहाड़ी पारिस्थितिक तंत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की बढ़ती जागरूकता, पर्वत समुदायों और परिणाम दुनिया के बाकी हिस्सों के लिए पहाड़ों को अच्छे विज्ञान, नीतियों और टिकाऊ विकास पर अंतर्राष्ट्रीय बहस के केंद्र में होना चाहिए।

11वां स्थापना दिवस समारोह

विश्वविद्यालय के ११ वें स्थापना दिवस समारोह का आयोजन दिनांक २० जुलाई २०१८ को सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय के प्रेक्ष्यगृह में किया गया थे। डॉ. एक्लब्य शर्मा, उप महानिदेशक समारोह के मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम विश्वविद्यालय के स्तुति गीत के साथ प्रारम्भ हुआ। कुलपति प्रोफेसर ज्योति प्रकाश तामांग ने स्वागत भाषण दिया जिसमें उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला। सिक्किम विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (एसयूटीए) के प्रतिनिधियों, सिक्किम विश्वविद्यालय गैर-शिक्षण संघ (सूत्सा) और सिक्किम विश्वविद्यालय छात्र संघ (एसयूएसए) ने भी अपना वक्तव्य रखा।

हिंदू कुश हिमालयी (एचकेएच) क्षेत्र के आठ देशों में काम कर रहे सतत पहाड़ विकास पर ३५ से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ एक प्रतिष्ठित पारिस्थितिक विज्ञानी डॉ. एकलव्य शर्मा द्वारा स्थापना दिवस व्याख्यान दिया गया था। डॉ शर्मा को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं और उन्होने भारत और विदेश दोनों में उत्कृष्ट पेशेवर कार्य किए हैं। डॉ शर्मा के लगभग २०० प्रकाशन हैं जिनमें से अधिकांश अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में १८ पुस्तकें प्रकाशित किए जा रहे हैं।